School of Education

Certificate

I hereby declare that the short synopsis " **प्राथमिक शिक्षा में कार्यरत शिक्षकों की डिजिटल शिक्षण दक्षता एवं डिजिटल शिक्षण प्रशिक्षण की आवश्यकता का अध्ययन** " (Prathamik Shiksha Mein Karyarat Shikshakon ki Digital Shikshan Dakshata evam Digital Shikshan Prashikshan ki Aavashyakta ka Adhyayan) being submitted in partial fulfillment of the requirement for the degree of Doctor of Philosophy in Education under school of Education of U.P. Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj during the academic year-2023-2024.

It is a bonafide record of original work carried out under the supervision of Dr. Surendra kumar and has not been submitted in full or part to any other university or institute for a degree or diploma Further, it is certified that the short synopsis is plagiarism-free and the repot has been submitted.

Shalu Sonkar

Shalu Sonkar

En. No.- 2300908

30.05.25

Research Supervisor & Co-Supervisor (If any)

Dr. Surendra kumar

Assistant professor

School of Education

30.05.2025

Prof. P.K. Astalin

(Director, School of education)

30/05/25

Prof. P. K. Pandey

(Secretary of DC/ Director, R&D Cell)

प्राथमिक शिक्षा में कार्यरत शिक्षकों की डिजिटल शिक्षण दक्षता एवं डिजिटल शिक्षण प्रशिक्षण की आवश्यकता का अध्ययन

(Prathamik Shiksha mein Karyarat Shikshakon ki Digital Shikshan Dakshata evam Digital Shikshan Prashikshan ki Aavashyakta ka Adhyayan)

Short Synopsis

Submitted in partial fulfillment of the requirement of the degree of
Doctor of Philosohy in Education
To
U.P. Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj

By

Shalu Sonkar
Enrollment No. 2300908

Under the supervision of

Dr. Surendra Kumar
Assistant Professor
School of Education

School of Education
U.P. Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj
Shantipuram, (Sector-F) Phaphamau, Prayagraj- 211021

Shalu Sonkar

प्राथमिक शिक्षा में कार्यरत शिक्षकों की डिजिटल शिक्षण दक्षता एवं डिजिटल शिक्षण प्रशिक्षण की आवश्यकता का अध्ययन

सारांश

वर्तमान समय में प्राथमिक शिक्षा में डिजिटलीकरण पर बल दिया जा रहा है। जिसके लिए प्राथमिक शिक्षा और प्राथमिक शिक्षा स्तर पर कार्यरत अध्यापकों पर विशेष ध्यान केंद्रित किया गया है। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था आधुनिक शिक्षा तकनीकी पर आधारित है जिसमें हमें एक ऐसे कुशल शिक्षक की आवश्यकता है जो डिजिटल शिक्षण कौशल में भी निपुण हो। अतः शोधार्थी के मन में अनेक प्रश्न उत्पन्न हुए जैसे– क्या डिजिटल शिक्षण में शिक्षक दक्ष है? क्या प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक डिजिटल शिक्षण उपकरणों एवं माध्यमों का उपयोग कुशलतापूर्वक कर पा रहे हैं? या उन्हे सेवाकालीन प्रशिक्षण की आवश्यकता है इत्यादि। जिनका उत्तर इस शोध कार्य द्वारा खोजने का प्रयास किया जाएगा।

मुख्य शब्द : प्राथमिक शिक्षा, बी.टी.सी./डी.एल.एड. प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षक, विशिष्ट बी.टी.सी. प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षक, शिक्षामित्र, डिजिटल शिक्षण दक्षता एवं डिजिटल शिक्षण प्रशिक्षण।

Shalu Sonkar

Contents

S. No.	Description	Page No.
1.	Introduction	1-3
2.	Literature Review	3-8
3.	Description Broad Area	8-11
4.	Objectives of the Study	11-12
5.	Research Methodology	12-13
6.	Expected Outcome of the Research	13-14
	References	14-15
	Plagiarism Report	

प्राथमिक शिक्षा में कार्यरत शिक्षकों की डिजिटल शिक्षण दक्षता एवं डिजिटल शिक्षण प्रशिक्षण की आवश्यकता का अध्ययन

1. प्रस्तावना

किसी भी राष्ट्र के संपूर्ण विकास में उस देश की शिक्षा व्यवस्था का महत्वपूर्ण योगदान होता है। शिक्षा व्यवस्था किसी भी देश के विकास की रीढ़ होती है। शिक्षा ही वह माध्यम है जिसके द्वारा समाज अपनी भावी पीढ़ी को उच्च आदर्शों, अभीष्ट आशाओं, सनातन मूल्यों, सतत विश्वासों तथा प्राचीन परम्पराओं से युक्त अपनी सांस्कृति धरोहर को हस्तांतरित करता है। जहां शिक्षण प्रक्रिया की बात आती है वहां शिक्षक का उल्लेख होना स्वाभाविक है। क्योंकि शिक्षा की प्रक्रिया में शिक्षक का स्थान महत्वपूर्ण होता है। उचित ढंग से शिक्षित व्यक्ति के अनुकरणीय कार्यों के फलस्वरुप ही समाज एवं राष्ट्र निरंतर उन्नति की ओर अग्रसर होता है।

शिक्षक ही वह शक्ति है जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से आने वाले संततियों पर अपना प्रभाव डालते हैं। राष्ट्र ऐसी योजनाओं और गतिविधियों को बनाने के लिए निरंतर अग्रसर रहते हैं जो शिक्षकों को नवीन सृजन और नई सोच के लिए प्रेरित प्रेरित करते हैं। शिक्षक नए राष्ट्र का निर्माता होता है।

कोठारी आयोग (1964– 66) के अनुसार "भारत के भाग्य का निर्माण भारत की कक्षा में हो रहा है।" इसलिए देश के विकास के लिए अच्छे शिक्षकों का होना बहुत ही आवश्यक है। किसी राष्ट्र का निर्माण वहां के नागरिकों के द्वारा होता है। प्रायः नागरिकों को शिक्षक द्वारा ही तैयार किया जाता है और शिक्षकों को शिक्षक–प्रशिक्षकों द्वारा तैयार किया जाता है। शिक्षा में शिक्षण या प्रशिक्षण द्वारा शिक्षक अपनी शिक्षण कौशलों में वृद्धि कर अपनी कुशलताओं एवं क्षमताओं में वृद्धि कर उसका सदुपयोग करता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में कहा गया है कि "शिक्षकों का स्थान एक समाज की सामाजिक सांस्कृतिक प्रवृत्ति को व्यक्त करता है कोई भी व्यक्ति अपने शिक्षक के स्तर से ऊपर नहीं उठ सकता।" राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 की प्रस्तावना में स्पष्ट किया गया था कि शिक्षा की गुणवत्ता और राष्ट्र के विकास में योगदान करने वाले सभी कारकों में निःसंदेह अध्यापक की सबसे अहम भूमिका होती है। सभी शैक्षिक प्रयासों की सफलता का कार्यभार अंततः उसी के निजी गुणों एवं उसकी व्यवसायिक क्षमताओं पर होती है। अध्यापक को युग निर्माता की संज्ञा दी जाती है क्योंकि देश का सुनहरा भविष्य सक्षम एवं सहयोगी अध्यापकों में निहित होता है। अतः अध्यापकों को भावी राष्ट्र निर्माण के लिए योग्य एवं प्रशिक्षित बनाना अति महत्वपूर्ण कार्य है। देश तथा समाज के संदर्भ में शिक्षक को गुरू से संबोधित किया जाता है। गुरू रविन्द्र नाथ टैगोर ने शिक्षक को जलते हुए दीपक की उपमा दी है।

Shalu Sonkar

अतः यह माना जाता है कि यदि शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाना है तो उसके लिए शिक्षक की गुणवत्ता में सुधार करना होगा। हमें ऐसे शिक्षक तैयार करना है जो शिक्षा को प्रभावशाली बना सके। जिसके लिए शिक्षकों को शिक्षक बनने से पूर्व एवं शिक्षक बनने के पश्चात् प्रशिक्षण दिया जाता है। शिक्षकों को प्रशिक्षण कार्यक्रमों के द्वारा शिक्षण में प्रवीण किया जाता है। शिक्षकों से अपेक्षा की जाती है कि उसने अपने शिक्षण अनुभव तथा अनुभूतियों से जो कुशलता प्राप्त किए हैं इसका व्यावहारिक रूप से प्रयोग कक्षा शिक्षण में कर सकें। क्योंकि अपने कार्यों तथा शैक्षणिक गतिविधियों को प्रभावशाली ढ़ंग से करना शिक्षक का मुख्य लक्ष्य होता है। शिक्षक कुशलता एवं दक्षता का प्रत्यक्ष सम्बन्ध शिक्षक के प्रशिक्षण से है। शिक्षक–प्रशिक्षण के समय एक शिक्षक अपने शिक्षण कौशलों एवं दक्षतााओं का विकास करता है जिससे वह कक्षा में किसी भी विषय वस्तु को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत कर सके। अध्यापक का कार्य ज्ञान एवं संस्कृति के संरक्षण तक सीमित नहीं है अपितु समाज में परिवर्तन लाना भी उसका उत्तरदायित्व है। एक शिक्षक प्रशिक्षण प्राप्त करके ही अपने सैद्धांतिक ज्ञान को व्यावहारिक रूप में प्रस्तुत करने तथा समाज में परिवर्तन लाने में सक्षम होता है।

आज का युग तकनीकी शिक्षा का युग है, आज शिक्षा एवं तकनीकी से शिक्षण पद्धति में आमूल चूल परिवर्तन लाने के साथ–साथ नवाचार को बढ़ावा दिया जा रहा है। शिक्षा के क्षेत्र में डिजिटल–शिक्षण शिक्षण में एक प्रमुख विषय बन गई है। आने वाले समय को देखते हुए डिजिटल–शिक्षा छात्रों और शिक्षकों दोनों के लिए महत्वपूर्ण है। शिक्षकों को डिजिटल–शिक्षा में डिजिटल तकनीकों को कुशलतापूर्वक उपयोग करने हेतु सीखने की आवश्यकता है, जिससे हमारी शैक्षिक प्रणाली विशेष रूप से सीखने–सिखाने के तरीकों में डिजिटलीकरण का प्रयोग करके शिक्षण को प्रभावशाली बनाया जा सके। डिजिटल शिक्षा में हो रहे परिवर्तन के साथ हम कैसे सीखते हैं? और क्या सिखाते हैं? दोनों में परिवर्तन करना होगा। ऐसा इसलिए क्योंकि शिक्षा में पढ़ना–लिखना और अंकगणित के साथ–साथ डिजिटल कौशल चौथी प्रमुख योग्यता बन गई है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी स्पष्ट संकल्पना है कि स्थानीय क्षेत्रीय, राज्य, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर की कार्यशालाओं के साथ–साथ ऑनलाइन शिक्षण विकास मॉड्यूल के रूप में प्रस्तुत करने की बात कही गई है, इसमें विद्यार्थियों और शिक्षक के समय एवं ऊर्जा की बचत हो सकेगी। भारत में शिक्षा की डिजिटलीकरण की दिशा में अनेकों प्रयास तेजी से किये जा रहे हैं।

Shalu Sonkar

आज डिजिटल शिक्षा की बात प्राथमिक शिक्षा से लेकर शिक्षा के सभी स्तर पर की जा रही है। प्राथमिक शिक्षा बच्चों को भावी जीवन के लिए तैयार करने की पहली सीढ़ी का काम करती है। इस स्तर पर बच्चों के विकास की जिम्मेदारी भी शिक्षकों पर ही होती है। अतः नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्यों के अनुरूप शिक्षकों को तैयार किया जाना अति आवश्यक है। निश्चितं है कि शिक्षा के सभी स्तरों पर शिक्षकों को डिजिटल शिक्षण में प्रशिक्षित होने की आवश्यकता होगी। क्योंकि प्राथमिक शिक्षा शिक्षा की आधारशिला है, इसलिए इसे सुदृढ़ करने के लिए प्राथमिक स्तर में व्यवस्थित शिक्षकों को डिजिटल कौशल में प्रवीण किया जाना आवश्यक होगा।

नई शिक्षा प्रणाली शिक्षा के क्षेत्र में जहां शिक्षक के सामने कई चुनौतियां उत्पन्न करती हैं वहीं इस प्रणाली में हर बच्चा महत्वपूर्ण है। शिक्षक जब प्रत्येक बच्चों की आवश्यकता को ध्यान में रखकर शिक्षण कार्य करता है तब बच्चे अधिक सीखते हैं। ऐसा कोई भी निश्चित पद्धति नहीं है जो सभी विद्यार्थियों को एक निश्चित ढंग से सिखा सके। इस तत्व को स्वीकार करते हुए की सभी विद्यार्थी अपने–अपने ढंग से सीखते हैं। *शिक्षक एक बच्चे की तरफ इशारा करते हुए बदलते हैं कि शुभम जब 7 वर्ष का था तो उसके पिता स्कूल में दाखिला कराने लाए थे और शुभम के पिता ने बतलाया था कि शुभम को पांच वर्ष की उम्र में एक इंग्लिश मीडियम स्कूल में दाखिला कर दिया था। दो वर्ष तक उसने उसे स्कूल में शिक्षा प्राप्त की किंतु शुभम की शिक्षा में कोई प्रगति नहीं हुई क्योंकि शुभम की मानसिक स्थिति सामान्य बच्चों के समान नहीं थी। शुभम की सीखने की गति सामान बच्चों से धीमी है, किंतु इस प्रकार के बच्चों को सामान्य कक्षा में सिखाया जा सकता है। आज शुभम चौथी कक्षा में पढ़ाई कर रहा है वह भी सामान्य बच्चों के साथ ऐसा संभव हुआ उसके अभिभावकों एवं हम शिक्षकों के मिले–जुले प्रयासों से हम शिक्षकों ने शुभम के अभिभावकों को समझाया "शुभम की थोड़ी अतिरिक्त देखभाल कर उसकी शैक्षिक स्थिति को सुधारा जा सकता है। आप घर पर अतिरिक्त समय में शुभम को अध्यापन कार्य कराएं जिससे शुभम की शैक्षिक स्थिति में सुधार लाया जा सकेगा।"* (पांडे, 2010)। प्रत्येक शिक्षक को बोधगम्य अभ्यास द्वारा अलग–अलग विद्यार्थियों के सीखने के तरीके पहचानने होंगे।

वर्तमान की शिक्षा प्रणाली में आधुनिक शिक्षण प्रविधियों की तकनीकी पर विशेष महत्व दिया गया है *सभी प्रकार की ई–शिक्षा (*चाहे वह शिक्षण–संस्था द्वारा हो, व्यावसायिक प्रशिक्षण का *हिस्सा हो या दूर शिक्षा पाठ्यक्रम के रूप में हो) में इलेक्ट्रॉनिक, इण्टरनेट एवं अन्य संचार समर्थित उपकरणों का बहुविध और बहुतायत में प्रयोग किया जाता है। वेब आधारित शिक्षा,*

Shalu Sonkar

कंप्यूटर आधारित शिक्षा, आभासी कक्षाएं और अन्य डिजिटल माध्यम इसके विविध रूप हैं जो स्वाभाविक तौर पर क्रियात्मक होते हैं। इनका उद्देश्य शिक्षक तथा शिक्षार्थियों के व्यक्तिगत अनुभव, अभ्यास एवं ज्ञान का संवर्धन करना, पाठ की गुणवत्ता बढ़ाना, सीखने के प्रति रुचि उत्पन्न करना, मूल्यांकन तथा प्रतिक्रिया के प्रति निष्पक्षता को बनाए रखना है। पाठ्य सामग्री को इंटरनेट, एक्सट्रानेट, कृत्रिम उपग्रह प्रसारण, ऑडियो/वीडियो, इंटरैक्टिव टेलीविजन, सी०डी० इत्यादि के माध्यम से लिखित मौखिक, श्रवण, दृश्य, एनीमेशन आदि के रूप में छात्रों तक पहुंचाया जाता है। (कुमार, ज्ञानेंद्र 2023)

2. संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण

पासी और शर्मा (1982) ने माध्यमिक स्तर की शिक्षकों की शिक्षक दक्षता को लेकर एक अध्ययन किया तथा अध्ययन से प्राप्त किया कि प्रश्न पूछना, पाठ का प्राक्कथन देना, कक्षा व्यवस्थापन करना, श्यामपट्ट का प्रयोग करना, उचित भाषा के पाठ को प्रस्तुत करना इत्यादि शिक्षण विधियों के प्रति 70– 80 प्रतिशत शिक्षकों में दक्षता पायी गई।

शुक्ला (1995) ने हमारे देश में शिक्षकों की शिक्षण योग्यता जानने के लिए अध्ययन किया और पाया कि स्कूल के अन्य कारकों के अलावा शिक्षक की दक्षता छात्रों की उपलब्धि पर प्रभाव डालने वाले प्रमुख कारकों में से एक है।

थाटे (1998) ने, ऐन एक्सपेरिमेण्टल स्टडी ऑफ दी रिलेटिव इफेक्टिवनेस ऑफ प्रोग्राम्ड लर्निंग एण्ड लर्निंग थ्रू आडियो विसुअल एड्स विथ रिफ्रेन्स टू सर्टेन सेलेक्टेड टॉपिक्स फ्राम दी सेलेबस ऑफ साईंस फॉर स्टूडेण्ट 5 टू 8 इन ग्रेटर नोएडा, विषय पर अध्ययन किया गया, जिसका उद्देश्य दृष्य–श्रव्य शिक्षण विधि, प्रोग्राम लर्निग विधि और परंपरागत विधि से शिक्षण के दृष्य–श्रव्य शिक्षण विधि, प्रोग्राम लर्निंग विधि और परंपरागत विधि से शिक्षण के उपरान्त तीनों समूहों के विद्यार्थियों के द्वारा प्राप्त प्रदत्तों की तुलना करना तथा उपलब्धि पर ट्रीटमेंट, लिंग और उनकी अंतःक्रिया पर प्रभाव का अध्ययन करना था। इस अध्ययन में ग्रेटर मुम्बई से 8 विद्यालयों का चयन किया गया। इन विद्यालयों की विभिन्न 24 कक्षाओं से 1381 विद्यार्थियों का चयन किया गया। चयनित विषय वस्तु पर आधारित प्रश्नों का सेट पर्वेक्षक द्वारा तैयार किया गया। तैयार प्रश्नपत्र के परीक्षण द्वारा सूचनाओं का संकलन किया गया। संकलित सूचनाओं का विश्लेषण प्रतिशतांक, टी–टेस्ट व एनोवा सांख्यिकी के द्वारा किया गया। विश्लेषण के निष्कर्षों से ज्ञात होता है कि दृष्य–श्रव्य विधि, प्रोग्राम लर्निंग विधि और पारंपरिक विधि से शैक्षिक उपलब्धि के विषय में अधिक प्रभावशाली है तथा लिंग के आधार पर दोनों समान रूप से प्रभावित हुए हैं।

महेश्वर, पांडे (2004) ने अपने अध्ययन में पाया कि शिक्षक योग्यता सकारात्मक रूप से बुद्धि, रचनात्मकता एवं शिक्षक दृष्टिकोण से संबंधित है।

सक्सेना, जे० और सिंह, एस० पी० (2007) ने "विभिन्न स्तर के शिक्षकों की शिक्षक दक्षता का अध्ययन" विषय पर शोध किया इस अध्ययन का परिणाम था कि–

- हिंदी एवं अंग्रेजी माध्यम के शिक्षकों की शिक्षक दक्षता में कोई सार्थक अंतर नहीं था।
- प्रशिक्षित अध्यापकों की शिक्षक दक्षता एवं अप्रशिक्षित अध्यापकों की अपेक्षा अच्छी पायी गई।
- महिला एवं पुरुष शिक्षकों की शिक्षक दक्षता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

कुमार, ए० जी० (2008) ने "प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण दक्षता पर संगठनात्मक वातावरण का प्रभाव" पर अध्ययन किया अध्ययन का निष्कर्ष निकला कि संस्थाओं के प्रकार शिक्षक दक्षता और वातावरण का प्रत्यक्षण लिंग से स्वतंत्र है।

यांग (2008) ने 'यूजिंग टेक्नोलॉजी टूल्स इन द पब्लिक स्कूल क्लासरूम' विषय पर अध्ययन किया, इस अध्ययन का उद्देश्य कक्षा शिक्षण में टेक्नोलॉजी के प्रयोग का विद्यार्थियों के ग्रेड, मोटीवेशन, एटीट्यूड और उपस्थिति पर प्रभावों का पता लगाना था। इस अध्ययन में रामस्टीन मिडिल स्कूल, रामस्टीन एअर वेस, जर्मनी को लिया गया, जिसके कक्षा 8 विज्ञान विषय से उद्देश्यपूर्ण प्रतिचयन के द्वारा 11 से 13 आयु वर्ग के 150 विद्यार्थियों का चयन किया गया, इन्हीं विषयों के अध्यापक भी इस अध्ययन में सम्मिलित किये गये। चयनित अध्यापकों ने 150 विद्यार्थियों को 2 दिन के निश्चित कार्यक्रमानुसार अपनी 5 कक्षाओं में से 1 कक्षा परंपरागत विधि से तथा 4 कक्षाओं में प्रौद्योगिकीय उपकरण जिनमें इंटरैक्टिव व्हाइट बोर्ड, इंटरनेट एक्सेस, एल०सी०डी० प्रोजेक्टर, लैपटाप, कम्प्यूटर और ऑनलाइन टेस्टिंग सम्मिलित हैं, की सहायता से शिक्षण कार्य किया। इस अध्ययन में सर्वे विधि से प्रश्नावली की सहायता से विद्यार्थियों एवं अध्यापकों से प्री एवं पोस्ट एक्टीविटी के संबन्ध में सूचनाओं का संकलन किया गया। संकलित सूचनाओं का तुलनात्क रूप से विश्लेषण किया गया, अध्ययन के परिणामों से ज्ञात होता है कि शिक्षण में प्रौद्योगीकी के प्रयोग से विद्यार्थियों की कक्षा में अधिगम सक्रियता बढ़ती है। वे प्रेरित होते हैं, उनके एटीट्यूड एवं उपस्थिति में सकारात्मक प्रगति देखने को मिलती है।

साबू, एस० (2010) के अध्ययन का निष्कर्ष था कि शिक्षकों के शिक्षण योग्यता पर सेवारत प्रशिक्षण का प्रभाव होता है।

ठोंबरे, सुनीता (2015) ने "शिक्षकों की कक्षा शिक्षक दक्षता का अध्ययन" विषय पर शोधकार्य किया तथा अध्ययन में पाया कि–

Shalu Sonkar

कक्षा में व्याख्यान के साथ नोट्स देना तथा छात्रों को अध्ययन के लिए उचित पृष्ठपोषण देना जैसे शिक्षक व्यवहार को जहां 67–70 प्रतिशत शिक्षकों द्वारा अधिक प्रभावी ढंग से व्यक्त किया गया वहीं मात्र 33 प्रतिशत शिक्षिकाओं ने ही इस शिक्षक व्यवहार को प्रभावी ढंग से करती हैं। 67 प्रतिशत शिक्षकों तथा 37 प्रतिशत शिक्षिकाओं द्वारा कक्षा में छात्रों को सीखने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। 63 प्रतिशत शिक्षिकाएं तथा 40 प्रतिशत शिक्षकों द्वारा छात्रों को उचित दिशा में निर्देशित करते हुए पाया गया। इस प्रकार स्पष्ट है कि छात्रों को निर्देशन देने के संबंध में शिक्षिकाएं, शिक्षकों की अपेक्षा छात्रों को अधिक प्रभावित करती हैं। अध्ययन से स्पष्ट है कि शिक्षकों द्वारा कुछ शिक्षण दक्षताओं जैसे 'कक्षा में प्रश्न पूछना' कक्षा को रुचिकर बनाना तथा उचित शिक्षण सामग्री का प्रयोग करना के प्रति बहुत ही कम दक्षता प्रकट होती है। अध्ययन से अवलोकित होता है कि कक्षा में जो प्रश्न पूछा जाता है वह सामान्यतः स्मृति आधारित प्रश्न ही होते हैं न कि छात्रों को चिंतन की उदबोधित करने वाला।

नाजिश, चपवाला, पांडे आर०, मिस्त्री, पी० (2016) ने 'रोल ऑफ आई.सी.टी. नीड ऐण्ड चैलेंज इन प्राइमरी एजुकेशन' विषय पर अध्ययन कार्य किया गया। अध्ययन बताता है कि पाठ्यक्रम में परिवर्तन से समाज के सामाजिक और आर्थिक ढ़ाचे के परिवर्तन में सहायता मिलती है। इस प्रकार के परिवर्तन के लिए आवश्यक है कि नये कौशलों की, क्षमताओं की, अभिवृत्तियों की जो शिक्षा में आई.सी.टी. को एकीकृत करके विकसित कर सकें। आई.सी.टी. का सफलतापूर्वक एकीकरण होना अनेक कारकों पर निर्भर करता है, जिसमें राष्ट्रीय नीतियां, विद्यालयी नीतियां और उनका क्रियान्वयन कॉफी प्रभाव डालता है। एक ऐसी आई.सी.टी. योजना की जरूरत है जो उन सभी शिक्षा से सरोकार रखने वालों, जो इस परिवर्तन में सम्मिलित हैं, को प्रशिक्षण और सहायता दी जाए। शैक्षिक सरोकार रखने वालों के मध्य उद्देश्य की जानकारी को प्रसारित किया जाए जिसके लिए सहयोगात्मक दृष्टिकोण को अपनाया जाना चाहिए। शिक्षा के वितरण और व्यापक पहुँच को सक्षम बनाने में आई.सी.टी. प्रभाव डाल सकती है। इसके अतिरिक्त यह लचीलापन लाएगी जिससे अधिगमकर्ता समय और भौगोलिक रूकावटों के बिना शिक्षा तक पहुँच सकता है। विद्यार्थी क्या पढ़े? और कैसे सीखे? के मार्ग को प्रभावित कर सकती है। यह सहयोगपूर्ण कौशलों के साथ–साथ ज्ञान सृजन कौशल के विकास में सक्षम बनायेगा। यह बदलाव अधिगमकर्ता को आजीवन सीखने के साथ–साथ व्यवसाय हेतु अच्छे से तैयार करता है। यह सीखने की गुणवत्ता को बढ़ाता है और इस प्रकार अर्थव्यवस्था में योगदान देता है। इसी प्रकार शिक्षा में सर्वश्रेष्ठ अभ्यास की व्यापक उपलब्धता आई.सी.टी. के साधनों द्वारा प्रसारित की जा सकती है। यह उत्तम

शिक्षण के लिए प्रोत्साहित कर सकती है। शिक्षा में आई.सी.टी. को प्रयुक्त करने से कुछ जोखिम उत्पन्न हो सकता है, जो इसकी गंभीरता को कम कर सकता है। आई.सी.टी. के सफलतापूर्वक क्रियान्वयन से शिक्षकों को प्रेरित करने एवं समर्थ बनाने और कम्प्यूटर कौशल अर्जित करने, सॉफ्टवेयर और उपकरणों को प्राप्त करने के बजाय यह अधिगम में विद्यार्थियों के साथ उन्हें जुड़ने में उनकी मदद करता है। इसके प्रयोग के उचित नियंत्रण और स्वतंत्रता को सुनिश्चित किया जाना चाहिए। जिससे कि जबाबदेही, गुणवत्ता की सुनिश्चितता, उपभोक्ताओं की मान्यता और सुरक्षा का ध्यान रखा जा सके। मूलभूत रूप से आई.सी.टी. शिक्षा को शिक्षा के लोकतंत्रीकरण को आगे बढ़ाने के योग्य बनायेगी।

भट्टाचाचारजी, बी० और देव, के० (2016) ने 'रोल ऑफ आई.सी.टी. इन 21वीं सेंचुरी टीचर एजुकेशन' विषय पर अध्ययन कार्य किया गया। इस अध्ययन का उद्देश्य 21वीं शताब्दी की शिक्षक शिक्षा में आई.सी.टी. की भूमिका का अध्ययन करना था। इस अध्ययन में वर्णनात्मक विश्लेषण विधि का उपयोग किया गया। संकलित सूचनाओं के अध्ययन से यह जानकारी प्राप्त होती है कि आई.सी.टी. शिक्षक को नवीन ज्ञान के श्रोतों एवं कौशलों से अवगत होने में तथा डिजिटल उपकरणों के उपयोग करने में सहायता करती है। आई.सी.टी. के ज्ञानार्जन एवं उपयोग से छात्राध्यापक प्रभावशाली शिक्षक बनेंगे। आई.सी.टी. समाज में तीव्र गति से परिवर्तन लाने वाला कारक है। यह शिक्षा की प्रकृति और शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में विद्यार्थियों एवं शिक्षकों की भूमिकाओं में परिवर्तन ला सकता है। भारत में अब शिक्षकों ने कक्षाओं में तकनीकी का उपयोग प्रारम्भ कर दिया है। 21वीं शताब्दी में हमें शिक्षक शिक्षण में आई.सी.टी. का उपयोग शुरू करना चाहिए, क्योंकि अब केवल शिक्षक ही विद्यार्थियों का भविष्य उज्जवल बना सकता है।

दास और ननिलता (2017) ने "स्कूल शिक्षकों की शिक्षण योग्यता का अध्ययन" विषय सम्बन्धित शोध किया तथा बताया कि केरल की पलक्कड़ जिले के माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के शिक्षण अनुभव और अन्य जनसांख्यिकीय चर के संबंध में शिक्षण योग्यता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

पटेल, भूमिक (2017) ने अहमदाबाद जनपद के प्राथमिक विद्यालयों की शिक्षक दक्षता का अध्ययन किया और पाया कि अधिकांश प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षक अपने शिक्षण में औसत सक्षम हैं। यह भी निष्कर्ष पाया कि प्रशिक्षित शिक्षक अनुभवी और कम प्रशिक्षित अनुभवी शिक्षक बी०टी०सी० और विशिष्ट बी०टी०सी० प्रशिक्षित शिक्षक और सरकारी तथा निजी स्कूलों के शिक्षक

शिक्षण में काफी भिन्न होते हैं, जबकि पुरुष और महिला शिक्षक, ग्रामीण तथा शहरी स्कूल शिक्षक, विवाहित और अविवाहित शिक्षक शिक्षण योग्यता में अलग नहीं होते हैं।

कुमार एवं साहू (2018) ने अध्यापक शिक्षकों की वृत्तिक विकास हेतु सेवाकालीन शिक्षा की आवश्यकता पर किये गये शोध में पाया कि बी.एड. एवं डी.एल.एड. प्रशिक्षण प्राप्त अध्यापकों से संस्थागत वित्तीय पृष्ठभूमि, विषय पृष्ठभूमि तथा अनुभव पृष्ठभूमि में समान आवश्यकता पायी गयी।

कुमार एवं साहू (2018) ने अध्यापक शिक्षकों की सेवाकालीन शिक्षा की आवश्यकता के सन्दर्भ में बी.एड. एवं डी.एल.एड. प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों को उनके स्वयं के शिक्षा हेतु के लिए 18 घटकों पर बिन्दुवार अध्ययन किया और पाया कि विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय में कार्यरत् बी. एड. एवं डी.एल.एड. प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों को शिक्षा की समान आवश्यकता महसूस हुई।

कुमार एवं साहू (2019) ने अध्यापक शिक्षकों के वृत्तिक विकास की आवश्यकता एवं परिप्रेक्ष्य के अध्ययन में पाया कि बी.एड. एवं डी.एल.एड. प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों के स्वयं के व्यक्तित्व विकास में, छात्राध्यापकों को समझने में, सामान्य शिक्षण एवं शिक्षणशास्त्र के शिक्षा की आवश्यकता में, पाठ्यक्रम विकास में, छात्राध्यापकों के विकास हेतु शिक्षा आवश्यकता में, सैद्धान्ति पाठ्यक्रम के ज्ञान हेतु शिक्षा आवश्यकता में, विद्यालयी पाठ्यचर्या सम्बन्धित विषय दक्षता की आवश्यकता में, क्षेत्र/प्रायोगिक क्रियाकलाप दक्षता की आवश्यकता में, कार्यक्रम कार्यान्वयन हेतु दक्षता की आवश्यकता में, नवाचारी शिक्षणशास्त्र हेतु शिक्षा की आवश्यकता में, शिक्षा तकनीक कौशल के ज्ञान की आवश्यकता में, इन्टर्नशिप शिक्षण कार्य के ज्ञान में, शैक्षिक तकनीक के ज्ञान की आवश्यकता में, आकलन एवं मूल्यांकन के ज्ञान के विकास में, अनुसंधान विकास हेतु ज्ञान की आवश्यकता में, क्रियात्मक अनुसंधान के ज्ञान की आवश्यकता में, संस्थान की गुणवत्ता के ज्ञान की आवश्यकता में, भविष्यपरक नियोजन करने के कौशल हेतु आवश्यकता मे बी.एड. एवं डी.एल. एड. प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। दोनों पक्ष के अधिकांश अध्यापकों ने इन बिन्दुओं पर अत्यन्त आवश्यकता स्तर पर मत रखे है।

एच० चिनालियानसियामा (2022) ने डॉयट, लंगुलेई के सेवा पूर्व छात्र –शिक्षकों की सामान्य शिक्षण दक्षता का अध्ययन किया। अध्ययन का उद्देश्य छात्र शिक्षकों की सामान्य शिक्षण दक्षता स्तर को जानना था। अध्ययन में निष्कर्ष आया की डॉयट लंगुलेई के सेवा पूर्व छात्र शिक्षकों की सामान्य शिक्षण योग्यता औसत है। लिंग के संबंध में शिक्षण योग्यता में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं था । डॉयट लंगुलेई जिले में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए सेवारत और पूर्व सेवारत शिक्षकों के गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण प्रदान करने में भूमिका निभाता है।

उपरोक्त संबंधित साहित्य के सर्वेक्षण से स्पष्ट होता है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) के आलोक में प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की डिजिटल शिक्षण दक्षता एवं डिजिटल प्रशिक्षण आवश्यकता से संबंधित अध्ययन नहीं हुआ है। अतः शोधकत्री ने इस शोध अंतराल को पूरा करने के लिए अग्रलिखित विषय पर अध्ययन करना समीचीन समझा।

3. अध्ययन का विस्तृत क्षेत्र

किसी भी राष्ट्र का विकास उसकी शिक्षा व्यवस्था पर निर्भर करता है, जैसी शिक्षा वैसा राष्ट्र। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में शिक्षण अधिगम के प्रक्रिया को ध्यान में रखते हुए शिक्षकों को शिक्षण में तकनीकी (ऑडियो धविजुअल, गैमिफिकेशन, कंप्यूटर इत्यादि) का प्रयोग करना चाहिए। जिससे बच्चों के सीखने और सीखाने की प्रक्रिया को और अधिक प्रभावशाली बनाया जा सके। इसके लिए हमें प्रभावशाली एवं डिजिटल शिक्षा में दक्ष शिक्षकों की आवश्यकता होगी। कक्षा एक ऐसा स्थान .है जहां भिन्न–भिन्न संस्कृतियों, योग्यताओं और क्षमताओं वाले बच्चे होते हैं और इन सभी कारकों को ध्यान में रखकर शिक्षा प्रदान करने के लिए एक निपुण, कुशल एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षक की आवश्यकता होती है। विभिन्न अध्ययनों स्पष्ट होता है कि शिक्षको की दक्षता एवं प्रशिक्षण कक्षा शिक्षण को प्रभावी बनाती है। शिक्षकों की दक्षता छात्र प्राप्ति पर प्रभाव डालती है– शुक्ला, (1995)। प्रशिक्षित शिक्षक समाज में आधुनिकरण और गतिशीलता ला सकती है– पॉल, (1999)। प्रशिक्षित अध्यापकों की शिक्षण दक्षता एवं अप्रशिक्षित अध्यापकों की अपेक्षा अच्छी पाई गई– सक्सेना जे. और सिंह एस.पी., (2007)। सेवाकालीन प्रशिक्षण का प्रभाव शिक्षक दक्षता पर पड़ता है– एस. साबू, (2010)। प्रशिक्षण के स्तर के अनुसार शिक्षकों की शिक्षण दक्षता में अंतर होता है– पटेल, (2017)। सभी विश्वविद्यालय व महाविद्यालयों में आई. सी. टी. के प्रयोग पर जोर देकर विषयी शिक्षण में कंप्यूटर का प्रयोग कर शिक्षण को आसान बनाया जाए– गुप्ता एवं सुराणा, (2019)। नई शिक्षा नीति 2020 में भी स्पष्ट संकल्पना है कि स्थानीय, क्षेत्रीय, राज्य, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय कार्यशालाओं के साथ–साथ ऑनलाइन शिक्षण विकास मॉड्यूल के रूप में प्रस्तुत करने की बात कही गई है। इसमें विद्यार्थी और शिक्षक दोनों के समय एवं ऊर्जा की बचत हो सकेगी। इस समय भारत में शिक्षा में डिजिटलीकरण की दिशा में अनेकों प्रयास तेजी से किये जा रहे हैं।

वर्तमान में सरकार द्वारा प्राथमिक शिक्षा को डिजिटलीकरण करने पर बल दिया जा रहा है। जिसके लिए प्राथमिक शिक्षा और प्राथमिक स्तर के अध्यापकों पर विशेष ध्यान केंद्रित किया गया है। जैसे कि हम जानते हैं प्राथमिक शिक्षा शिक्षा की नींव होती है, नींव जितनी मजबूत होगी

Shalu Sonkar

इमारत उतनी ही मजबूत बनेगी। आज की शिक्षा आधुनिक तकनीकी शिक्षा पर आधारित है जिसमें हमें एक ऐसे शिक्षक की आवश्यकता है जो डिजिटल शिक्षण कौशल में निपुण हो जिससे वह शिक्षक को प्रभावशाली बना सके। अतः शोधार्थी के मन में अनेक प्रश्न उत्पन्न हुए जिनका उत्तर प्रयुक्त शोध कार्य द्वारा खोजने का प्रयास किया जाएगा।

शोध प्रश्न

1. क्या डिजिटल शिक्षण में शिक्षक दक्ष है?
2. क्या प्राथमिक विद्यालय में कार्यरत शिक्षक डिजिटल कंप्यूटर उपकरण, इंटरनेट एवं ऑनलाइन मंच (ऑनलाईन प्लेटफार्म) इत्यादि का उपयोग कुशलतापूर्वक कर पा रहे हैं?
3. क्या विद्यालयों में डिजिटल शिक्षण सम्बन्धित पर्याप्त संसाधन उपलब्ध हैं?
4. क्या राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की अपेक्षा के अनुरूप शिक्षक ऐसे शिक्षण विधियों को अपना रहे हैं जिससे विद्यार्थियों के सीखने के प्रतिफल में वृद्धि हो रही है?
5. क्या उन्हें सेवाकालीन प्रशिक्षण की आवश्यकता है?

समस्या कथन

"प्राथमिक शिक्षा में कार्यरत शिक्षकों की डिजिटल शिक्षण दक्षता एवं डिजिटल शिक्षण प्रशिक्षण की आवश्यकता का अध्ययन"

प्रयुक्त तकनीकी शब्दों की संक्रियात्मक परिभाषा

प्रस्तुत शोध विषय में प्रयुक्त तकनीकी शब्दों की संक्रियात्मक परिभाषा इस प्रकार है –

प्राथमिक शिक्षा –

प्राथमिक शिक्षा से तात्पर्य कक्षा 1 से कक्षा 8 तक की शिक्षा से है। जिनमें 6 वर्ष से 14 वर्ष तक के बच्चों को पढ़ाया जाता है।

प्राथमिक शिक्षा में कार्यरत शिक्षक –

प्राथमिक शिक्षा में कार्यरत शिक्षक का तात्पर्य उन शिक्षकों से है जो निम्न प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक कक्षाओं में पढ़ाने के लिए शिक्षक के रूप में कार्यरत हैं। जिनकी शैक्षिक एवं प्रशिक्षण योग्यता बी.टी.सी./डी.एल.एड., बी.एड. एवं शिक्षामित्र जिनको राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान से प्रशिक्षण प्राप्त है। प्राथमिक शिक्षा हेतु विद्यालयों में निम्नलिखित तीन प्रकार के प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षक कार्यरत हैं–

- बी.टी.सी./डी.एल.एड. प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षक
- विशिष्ट बी.टी.सी. प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षक

Shalu Sonkar

- शिक्षामित्र

- ***बी.टी.सी./डी.एल.एड. प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षक*** :– बी.टी.सी./डी.एल.एड. प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों से तात्पर्य उन शिक्षकों से है जिन्होंने राज्य सरकार द्वारा संचालित डॉयट (जिला शिक्षा प्रशिक्षण संस्थान) एवं प्रशिक्षण महाविद्यालयों से बी.टी.सी. या डी.एल.एड. प्रशिक्षण प्राप्त .किया है तथा जिनकी नियुक्ति प्राथमिक विद्यालयों में किया जाता है।

- ***विशिष्ट बी.टी.सी. प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षक*** :– विशिष्ट बी.टी.सी. प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों से तात्पर्य उन शिक्षकों से है जो बी.एड. या एल.टी. उपाधि प्राप्त किए हैं तथा जिन्हें राज्य सरकार के निर्देशानुसार प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षक की कमी को पूरा करने के लिए डॉयट (जिला शिक्षा प्रशिक्षण संस्थान) में छः माह का विशिष्ट बी.टी.सी. प्रशिक्षण प्रदान कर प्राथमिक विद्यालयों में नियुक्त कर दिया जाता है। बी.एड. दो वर्षीय प्रशिक्षण पाठ्यक्रम है जो स्नातक अथवा परास्नातक शिक्षा के बाद प्रशिक्षण विश्वविद्यालयों तथा महाविद्यालयों द्वारा संचालित किया जाता है।

- ***शिक्षामित्र*** :– शिक्षामित्र से तात्पर्य उन शिक्षकों से हैं जिनका चयन ग्राम पंचायत के उप प्रधान की अध्यक्षता में अन्य सदस्यों के सुझाव एवं ग्राम सभा के प्राथमिक विद्यालयों के प्रधानाध्यापक की सलाह तथा मुख्य विकास अधिकारी एवं उनके अधीनस्थ अधिकारियों की संतुष्टि से योग्यता के आधार पर गांव के ही किसी व्यक्ति (पुरुष/महिला अभ्यर्थी) का चयन किया जाता है तथा प्राइमरी विद्यालयों में अध्यापकों की कमी को पूरा करने के लिए नियुक्त किया जाता है। इस प्रकार से नियुक्त शिक्षामित्रों को राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान से डी.एल.एड. प्रशिक्षण प्रदान किया गया है।

डिजिटल शिक्षण दक्षता –

दक्षता शब्द विभिन्न क्षेत्रों में एवं विषयों में उपयोग किया जाता है। शिक्षा जगत में शिक्षकों की दक्षता क़ा अनुमान शिक्षक प्रशिक्षण प्राप्त करने के पश्चात् शिक्षकों की कुशलता, क्षमता में परिवर्तन तथा व्यवहार की उस सफल अभिव्यक्ति से लगाया जाता है जिसे वह कक्षागत परिस्थियों में अधिगमकर्ता में वांक्षित परिवर्तन एवं शिक्षण के उद्देश्यों को पूर्ण करने में प्रयुक्त करता है।

डिजिटल शिक्षण से तात्पर्य प्रौद्योगिकी, उपकरण, अंतर क्रियाशीलता, अवधि, अध्ययन सामग्री और उपयुक्त प्लेटफार्म के माध्यम से कक्षा में शिक्षण को और अधिक संवेदात्मक, विषय के प्रति रोचकता, उत्साह और मनोरंजन बनाना है।

Shalu Sonkar

अतः डिजिटल शिक्षण दक्षता का अर्थ है कि शिक्षकों द्वारा आधुनिक प्रौद्योगिकी उपकरणों, तकनीकियों . एवं विधियों का उपयोग करते हुए दक्षता तथा कुशलता पूर्वक शिक्षण कार्य करना जिससे शिक्षण उद्देश्यों के अनुरूप अधिगमकर्ता में वांक्षित परिवर्तन हो सके।

डिजिटल शिक्षण प्रशिक्षण –

डिजिटल शिक्षण प्रशिक्षण से तात्पर्य सीखने व सिखाने की विधियों में डिजिटल प्रौद्योगिकियों और ऑनलाइन मंच (ऑनलाइन प्लेटफार्म) के उपयोग से है। इसमें ऑनलाइन और कंप्यूटर आधारित प्रशिक्षण के विभिन्न रूप (इंटरनेट, कंप्यूटर, ई–बुक्स, डिजिटल बुक्स, ऑडियो/वीडियो इत्यादि) सम्मिलित हैं। जिससे शिक्षकों के शैक्षणिक क्षमतावर्धन में उन्नयन होगा और नवीन शैक्षिक विधियों व पद्धतियों से पढ़ने में सक्षम होंगे। जिसके लिए (दीक्षा, प्रेरणा, निपुण) एप का उपयोग करना है।

शिक्षकों को उच्चतर गुणवत्ता की सामग्री के साथ–साथ शिक्षण में प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। सभी बी.एड. और बी.टी.सी./डी.एल.एड. कार्यक्रमों में शिक्षण शास्त्र की तकनीकी, नवीनतम तकनीक आदि के प्रशिक्षण और शैक्षिक प्रौद्योगिकी की यथा– व्यवहार तकनीकी, अनुदेशन तकनीकी, शिक्षण तकनीकी आदि के प्रयोग, शिक्षार्थी केन्द्रित एवं सहयोगात्मक शिक्षण में सम्मिलित शिक्षकों को शिक्षार्थी केन्द्रित अध्ययन में गहन प्रशिक्षण दिया जाता है।

4. अध्ययन के उद्देश्य

शोधकर्त्री द्वारा इस अध्ययन हेतु निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं–

1. प्राथमिक शिक्षा में कार्यरत शिक्षकों की डिजिटल शिक्षण दक्षता का अध्ययन करना।
2. प्राथमिक शिक्षा में कार्यरत शिक्षकों की डिजिटल शिक्षण दक्षता की तुलना करना।
3. प्राथमिक शिक्षा में कार्यरत महिला एवं पुरुष शिक्षकों की डिजिटल शिक्षण दक्षता का अध्ययन करना।
4. प्राथमिक शिक्षा में कार्यरत महिला एवं पुरुष शिक्षकों की डिजिटल शिक्षण दक्षता की तुलना करना।
5. ग्रामीण एवं शहरी परिक्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों में कायरर्त शिक्षकों की डिजिटल शिक्षण दक्षता का अध्ययन करना।
6. ग्रामीण एवं शहरी परिक्षेत्र के प्राथमिक विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों की डिजिटल शिक्षण दक्षता की तुलना करना।

7. प्राथमिक शिक्षा में कार्यरत शिक्षकों की डिजिटल शिक्षण प्रशिक्षण आवश्यकता का अध्ययन करना।

8. प्राथमिक शिक्षा में कार्यरत शिक्षकों की डिजिटल शिक्षण प्रशिक्षण आवश्यकता की तुलना करना।

9. ग्रामीण एवं शहरी परिक्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की डिजिटल प्रशिक्षण आवश्यकता का अध्ययन करना।

10. ग्रामीण एवं शहरी परिक्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की डिजिटल प्रशिक्षण आवश्यकता की तुलना करना।

11. प्राथमिक शिक्षा में कार्यरत महिला एवं पुरुष शिक्षकों की डिजिटल प्रशिक्षण आवश्यकता का अध्ययन करना।

12. प्राथमिक शिक्षा में कार्यरत महिला एवं पुरुष शिक्षकों की डिजिटल प्रशिक्षण आवश्यकता की तुलना करना।

5. शोध विधि –

इस अध्ययन के अंतर्गत निम्न अध्ययन प्रविधि, जनसंख्या, न्यादर्श, न्यादर्शन, उपकरण एवं अध्ययन विधि का प्रयोग किया जाएगा–

अध्ययन प्रविधि –

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य प्राथमिक शिक्षा में कार्यरत शिक्षकों की डिजिटल शिक्षण दक्षता एवं डिजिटल शिक्षण प्रशिक्षण की आवश्यकता का अध्ययन करना है जिसके लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जाएगा।

जनसंख्या –

प्रस्तुत शोध अध्ययन में जनसंख्या के रूप में उत्तर प्रदेश के वाराणसी जनपद में संचालित समस्त प्राथमिक विद्यालयों एवं उनमें कार्यरत समस्त शिक्षकों को सम्मिलित किया जाएगा।

न्यादर्श एवं न्यादर्शन विधि –

प्रस्तुत शोध में अध्ययन हेतु प्रतिदर्श का चयन स्तरीकृत यादृच्छिक न्यादर्शन विधि से किया जाएगा। प्रस्तुत शोध में वाराणसी जनपद के विभिन्न विकास खण्डों में संचालित प्राथमिक शिक्षा के 300 महिला एवं 300 पुरुष अध्यापकों को प्रतिदर्श के रूप में चयनित किया जाएगा। जिसका विवरण सारणी के अनुसार निम्नलिखित है –

Shalu Sonkar

प्रतिदर्श के प्रकार	महिला शिक्षक	पुरुष शिक्षक	कुल प्रतिदर्श
बी.टी.सी. / डी.एल.एड. प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षक	100	100	200
विशिष्ट बी.टी.सी. प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षक	100	100	200
शिक्षामित्र	100	100	200
कुल प्रतिदर्श	**300**	**300**	**600**

शोध उपकरण –

प्रस्तुत शोध हेतु शोधकर्त्री द्वारा स्वनिर्मित निम्न शोध उपकरणों का प्रयोग किया जाएगा –

- डिजिटल शिक्षण दक्षता प्रश्नावली
- डिजिटल शिक्षण प्रशिक्षण आवश्यकता प्रश्नावली

समंक संकलन प्रक्रिया एवं प्रयुक्त सांख्यिकीय विश्लेषण प्रविधि –

शोधकर्त्री द्वारा स्वयं क्षेत्र में जाकर प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों (संमक के लिए चयनित) से प्रश्नावली भरवाकर शोध हेतु समंक (आंकड़े) एकत्रित किए जाएंगे। आंकड़ों के विश्लेषण के लिए प्रसरण विश्लेषण (ANOVA) तत्पश्चात आवश्यकतानुसार टी–परीक्षण (t -Test) का प्रयोग किया जाएगा। आवश्यकतानुसार प्रतिशत विश्लेषण भी किया जायेगा।

अध्ययन की परिसीमाएं

प्रस्तावित शोध कार्य वाराणसी जनपद के ग्रामीण एवं शहरी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों तक सीमित रहेगा।

6. शोध के अपेक्षित परिणाम

शोधकर्त्री ने अध्ययन के उद्देश्यों के आलोक में शोध के अपेक्षित परिणाम हेतु निम्न परिकल्पनाओं का निर्माण किया है–

1. प्राथमिक शिक्षा में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण दक्षता में अंतर है।
2. ग्रामीण एवं शहरी परिक्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की डिजिटल शिक्षण दक्षता में अंतर है।
3. प्राथमिक शिक्षा में कार्यरत महिला एवं पुरुष शिक्षकों की डिजिटल शिक्षण दक्षता में अंतर है।
4. प्राथमिक शिक्षा में कार्यरत शिक्षकों की डिजिटल प्रशिक्षण आवश्यकता में सार्थक अंतर है।

Shalu Sonkar

5. ग्रामीण एवं शहरी परिक्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की डिजिटल प्रशिक्षण आवश्यकता में सार्थक अंतर है।

6. प्राथमिक शिक्षा में कार्यरत महिला एवं पुरुष शिक्षकों की डिजिटल प्रशिक्षण आवश्यकता में सार्थक अंतर है।

अध्यायीकरण

प्रस्तुत अध्ययन को पांच अध्याय में वर्णित किया जाएगा जो इस प्रकार है –

अध्याय 1 : प्रस्तावना
अध्याय 2 : संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण
अध्याय 3 : अध्ययन विधि
अध्याय 4 : प्रदत्त विश्लेषण एवं व्याख्या
अध्याय 5 : निष्कर्ष एवं शैक्षिक निहितार्थ

- संदर्भ ग्रंथ सूची
- परिशिष्ट

संदर्भ ग्रंथ सूची

- देसाई, एस० और देस्पांडे, एस० (1996), शिक्षण योग्यता, शिक्षा में परिप्रेक्ष्य, वॉल्यूम–12 नं.2,
- ग्रेवाल, एस० एस० (1988), शिक्षक प्रभावशीलता, प्रकाशन ब्रदर 546, पुस्तक बाजार, लुधियाना।
- ललिता, ए० आर० (1993), ''बी०एड० की शिक्षण योग्यता के संबंध में रचनात्मकता का अध्ययन'' बेंगलुरु विश्वविद्यालय, अप्रकाशित पी–एच०डी० शिक्षा विभाग, थीसिसः बेंगलुरु।
- मैथ्यू आर० (1978), ''माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के बीच शिक्षक दक्षताओं की तुलनात्मक संरचना'' पी–एच०डी० थीसिस, शिक्षा संकाय एम०एस०वी०, बड़ौदा ।
- नसीमा, (1993), ''भौतिक विज्ञान पढ़ने की संतुष्टि के संबंध में माध्यमिक विद्यालय के भौतिक विज्ञान शिक्षकों की शिक्षण योग्यता '' पी–एच०डी० थीसिस, कालीकट विश्वविद्यालय।
- एन०सी०ई०आर०टी० (1997), शैक्षिक अनुसंधान का पांचवा सर्वेक्षण (1988–92) खंड 1, एन.सी.ई.आर.टी. : नई दिल्ली।
- पांडा, एंम० (2004), ''रचनात्मकता बुद्धि और शैक्षिक दृष्टिकोण से शिक्षण योग्यता की भविष्यवाणी : एक अध्ययन'' भारतीय शैक्षिक समीक्षा, वॉल्यूम ।

- पासी, बी० के० और ललिता, एम० एस० (1994), सामान्य शिक्षण योग्यता पैमाना, आगरा, राष्ट्रीय मनोवैज्ञानिक कॉरपोरेशन।
- पॉल, एस० (1999), ''असम के चौसर जिले के माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की नौकरी एवं संतुष्टि और शिक्षण क्षमता के मध्य संबंध'', जर्नल ऑफ ऑल इंडिया एसोसिएशन ऑफ एजुकेशनल रिसर्च, खंड नं.1।
- गौड, रविकांत (2020), ''प्राथमिक विद्यालय में कार्यरत बी.एल.एड. चार वर्षीय और डी. एल. एड. पाठ्यक्रम उत्तीर्ण शिक्षकों की शिक्षण दक्षता और प्रभावशीलता का शिक्षण प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों के संदर्भ का तुलनात्मक अध्ययन'' पी–एच.डी., शिक्षा विभाग, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ।
- वर्मा, नेहा (2019), ''शिक्षक शिक्षा में नवाचार की भूमिका'', CHETANA, Peer Reviewed referred journal JULY-SEPTEMBER 2019, YEAR-4, VOLUME-3 (www.echetana.com, Search on 27.12.2023)
- लाल, अवध बिहारी (2021), ''उच्च प्राथमिक विद्यालयों के कक्षा शिक्षण में डिजिटल उपकरणों का प्रयोग विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं उपस्थित पर प्रभाव एक प्रयोगात्मक अध्ययन'' पी–एच.डी., थीसिस, शिक्षा विभाग, लखनऊ : उच्च शिक्षा अध्ययन संस्थान लखनऊ विश्वविद्यालय।
- कुमार, ज्ञानेंद्र (2023), ''ऑनलाइन शिक्षा बनाम ऑफलाइन शिक्षा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के विषय संदर्भ मे'', शिक्षा की प्रभावशीलता, (संपादित पुस्तक), मध्य प्रदेश : शासकीय महाराजा मार्तंड महाविद्यालय कोतमा ।
- एम.एच.आर.डी. (   ), ''प्रज्ञात'', डिजिटल एजुकेशन मार्गदर्शिका, (हिंदी संपादन) देहरादून : राज्य शैक्षिक प्रबंधन एवं प्रशिक्षण संस्थान उत्तराखंड ।

DrillBit

The Report is Generated by DrillBit Plagiarism Detection Software

Selected Language **Hindi**

Submission Information

Author Name	Shalu Sonkar
Title	प्राथमिक शिक्षा में कार्यरत शिक्षकों की डिजिटल शिक्षण दक्षता एवं डिजिटल शिक्षण प्रशिक्षण की आवश्यकता का अध्ययन
Paper/Submission ID	3700586
Submitted by	skumarald563@gmail.com
Submission Date	2025-05-30 13:29:09
Document type	Synopsis

Result Information

Similarity **1%**

A Unique QR Code use to View/Download/Share Pdf File

Shalu Sonkar